धर्म और कर्म का भारतीय मुक्त दूरस्थ शिक्षा में असंबद्ध

प्रो. जी. राम रेड्डी*
प्रोफेसर वी.एस. प्रसाद**
अश्वनी***

"विचार और वास्तविकता के बीच में छाया गिरती है"
– टी. एस. ईलियट

1 परिचयात्मक टिप्पणी

1.1 मैं भारतीय दूरस्थ शिक्षा संघ (IDEA) को वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर प्रो. जी. राम रेड्डी व्याख्यान आयोजित करने पर बधाई देता हूँ। यह भारत में मुक्त दूरस्थ शिक्षा और विशेषकर मुक्त विश्वविद्यालयी व्यवस्था के योगदान के लिए प्रो. जी. राम रेड्डी को मुक्त दूरस्थ शिक्षा समुदाय द्वारा पेशेवर आभार अभिव्यक्ति है। दो मुक्त विश्वविद्यालयों के संस्थापक कुलपति के तौर पर – पहला मुक्त विश्वविद्यायल (भीम राव अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय–1982) और राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू–1985) प्रो. जी. राम रेड्डी का मुक्त दूरस्थ शिक्षा के लिए योगदान अत्यधिक सराहनीय है ओर इन्हें भारत में मुक्त विश्वविद्यालयी व्यवस्था के पिता के रूप में माना जाता है। मुझे प्रो. जी. राम रेड्डी के गुरूकुल से संबंधित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुक्त विश्वविद्यालय से मेरा परिचय इन्हीं के द्वारा हुआ। यह मेरे लिए अवसर है कि मैं अपने गुरू और संरक्षक के प्रति आभार व्यक्त करूँ। मुझे यह अवसर देने पर मैं आयोजकों– भारतीय दूर शिक्षा संघ और मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय (MANUU) का आभारी हूँ।

1.2 एक समय पर मैं भारत में मुक्त दूरस्थ शिक्षा के प्रसरण का सक्रिय सहभागी था। अब, मैं रास्ते के दूसरे पक्ष की तरफ से मुक्त दूरस्थ शिक्षा के प्रसरण को देख रहा हूँ। यह कहा जाता है कि जो व्यक्ति जुलूस में है उससे ज्यादा अच्छा नज़रिया जुलूस से बाहर रहने वाले का होता है। मैं *"बुद्धि के निराशावाद के साथ चीजों को देख रहा हूँ लेकिन आशावाद की इच्छा के साथ"* (सम्मान के साथ एनटोनिओ ग्रामसी)। मैं एक *"विक्षुब्ध आशावादी"* हूँ– मुक्त दूरस्थ शिक्षा के कुछ अभ्यासों से विक्षुब्ध हूँ और इसकी अन्तर्निहित शक्ति से आशावादी हूँ।

2.1 भारत में आधुनिक व्यवस्था में मुक्त दूरस्थ शिक्षा अधिगम की पचास साल की कहानी उपलब्धि और कुंठा की है। दिल्ली विश्वविद्यालय के 1962 में पत्राचार कार्यक्रम के प्रारंभ से ही इसे आधुनिक भारतीय उच्च शिक्षा में मुक्त दूरस्थ शिक्षा को सामान्यतया स्वीकार किया गया है। 1982 में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय और 1985 में राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना भारतीय मुक्त दूरस्थ शिक्षा के विकास में ज़मीनी निशान है। आज 14 मुक्त विश्वविद्यालय और लगभग 200 संस्थानों की मुक्त दूरस्थ शिक्षा की व्यापक व्यवस्था है जो कि विविध क्षेत्रों में लगभग 4 मिलियन पंजीकृत विद्यार्थियों को उपलब्ध है। *प्रस्तुतीकरण का विषय है वर्तमान अभ्यासों को आलोचनात्मक रूप से जाँचना, जिसे कर्म कहा है, उन सिद्धांतों के साथ जो हमें सही क्रिया करने की दिशा दिखाते है उसे धर्म कहा है। मैंने आदर्श (धर्म) और अभ्यास (कर्म) में कुछ असंबद्ध पाया है इसलिए यह विषय बनाया है 'धर्म और कर्म का भारतीय मुक्त दूरस्थ शिक्षा अधिगम में असंबद्ध'।* धर्म और कर्म शब्दों का प्रयोग धर्मनिरपेक्ष भाव से सही और वास्तविक अभ्यास करने से है। विषय के प्रस्तुतीकरण के शीर्षक से नकारात्मक भाव दिखता है परंतु यह नकारात्मकता को समझने का प्रयास है जिससे सकारात्कता की और आगे बढ़ें। प्रस्तुतीकरण में निम्न पहलू सम्मिलित हैंः क) मुक्त दूरस्थ शिक्षा का धर्म; ख) मुक्त दूरस्थ शिक्षा का कर्म; ग) असंबद्ध का क्षेत्र; घ) आगे की दिशा में (भविष्य)

3 मुक्त दूरस्थ शिक्षा का धर्म

मुक्त दूरस्थ शिक्षा सोचने का रास्ता और कार्य करने का मार्ग है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा में निम्न आवश्यक तत्व शामिल हैं:–

3.1 शिक्षा के लोकतंत्रीकरण का एक प्रभावी उपकरण

"Ivory Tower Thrown Open" शीर्षक की पुस्तकें मुक्त दूरस्थ शिक्षा पर है। यह मुक्त दूरस्थ शिक्षा का भाव संदेश प्रेषित करती है। सभी तक पहुँच और अधिगमकर्त्ता अपने अधिगम को स्वयं प्रबंधित करे ये दो अधिगम लोकतंत्रीकरण के आवश्यक तत्व है। मुक्त प्रवेश की नीति इस पूर्वानुमान पर है कि प्रस्थान मान्य स्तर पर रहेगा और प्रवेश का स्तर महत्वपूर्ण नहीं है। लोकतांत्रिक राज्यव्यवस्था में जैसे नागरिक केंद्र में है उसी तरह अधिगमकर्त्ता लोकतांत्रिक शिक्षा व्यवस्था में केंद्र में है। यूनेस्को ने मुक्त अधिगम को एक संस्थायी व्यवस्था माना है जिसके बहुत से अधिगम तथ्य अधिगमकर्त्ता से बाहर निकल कर आते हैं। यह अध्ययन स्वायत्तता का मॉडल है जिसमें समय की बाध्यता के बिना और व्यापक संख्या में शिक्षा तक पहुँच बनती है। यह पैमाने पर अधिक अवसर उपलब्ध कराता है जो कि दूसरी परिस्थितियों से ज्यादा संभव है।

**स्मृति व्याख्यान, IDEA– 2013, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, हैदराबाद*

*** भूतपूर्व निदेशक NAAC, भूतपूर्व कुलपति BRAOU और IGNOU*

**** सहायक प्रोफेसर, शिक्षा, दूर शिक्षा निदेशालय, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद*

3.2 सामाजिक न्याय का साधन

विकासशील देशों में विशेषकर गरीबों के लिए शैक्षिक अवसर सीमित हैं जिसके बहुत से सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक कारण हैं। मुक्त दूरस्थ शिक्षा से संभव है कि लोग कुछ सीमितताओं से बाहर आएँ। इसमें अध्ययन का लचीलापन अधिगमकर्त्ता को इस योग्य बनाता है कि वह अध्ययन के साथ काम और परिवार को भी देख सकता है; यह लोगों की भौगोलिकता को भी शामिल करता है वरना वे बहिष्कृत हो जायेगें; जहाँ पर महिलाओं की स्वतंत्र गतिविधि संभव नहीं है यह उनके समावेशन में सहायता करता है; यह समूहों की सहभागिता को अनुमति देता है वरना ये खर्च के कारण बाहर हो जायेगें। इस तरह यह शिक्षा का ज्यादा समावेशी स्वरूप है।

3.3 विकास का साधन

मुक्त दूरस्थ शिक्षा विकास की एक राष्ट्रीय रणनीति है जिसे बहुत से विकासशील देशों ने शिक्षा का दृष्टि दस्तावेज़ बनाया है। *'विकास के लिए अधिगम'* कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग का दृष्टि और लक्ष्य भी है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा विस्तारित रूप से क्षमता निर्माण, कौशल विकास और कार्यरत जनसमुदाय के विकास के लिए व्यावसायिक उपयोजित की जाती है।

3.4 शिक्षा का तकनीकि माध्यम

समय ओर जगह के कारणों से पढ़ाई से दूर हो गये लोगों के लिए दूर शिक्षा द्वारा शिक्षण और अधिगम का वितरण विभिन्न माध्यमों से होता है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा में तकनीकि के प्रयोग से शैक्षिक अवसरों का विस्तार करना और अधिगम अनुभवों को बढ़ाना है। विलक्षण विकास ने तकनीकि के क्षेत्र में जगह बनाई और उनका शैक्षिक प्रक्रिया में प्रयोग होता है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा को विभिन्न पीढ़ियों में तकनीकि के प्रकार और उसके प्रयोग के विस्तार से वर्गीकृत किया जा सकता है। पारस्परिक तकनीकि और मुक्त शैक्षिक स्रोतों ने मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है।

3.5 गुणात्मक अनिवार्यता

गुणवत्ता मुक्त दूरस्थ शिक्षा धर्म के दूसरे तत्वों को अर्थपूर्ण बनाने में आवश्यक है। अधिगम सामग्री, विद्यार्थी सहायता सेवा, विद्यार्थी मूल्यांकन और प्रशासनिक सेवाओं की गुणवत्ता सूक्ष्म रूप से मुक्त दूरस्थ शिक्षा को प्रभावित करती है। तुलनात्मकता के संदर्भ में मुक्त दूरस्थ शिक्षा की वैधता और विश्वसनीयता, गुणवत्ता सुनिश्चितता और संचालन पर निर्भर करता है। व्यवस्था की मुक्तता गुणवत्ता के संचालन की जवाबदेही को जनता के लिए और सुक्ष्म जाँच बनायेगी।

3.6 शिक्षक एक सहायक है

मुक्त दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक एक सहायक के तौर पर है जबकि पारम्परिक स्वरूप में वह अनुदेशक है। शिक्षक की भूमिका एक चरण (कार्यक्षेत्र) से दूसरे चरण में स्थानांतरित हो गई है अब वह दूसरे तरफ़ से मार्गदर्शन करता है। शिक्षण का केंद्रबिंदु विवरणात्मक शिक्षण से सहायक शिक्षण में बदल गया है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण भी एक समूह और सामूहिक गतिविधि है। बहु माध्यम स्वरूप में शिक्षण और अधिगम का विषय विशेषज्ञ उस अकादमिक समूह का सदस्य है जो कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा के शिक्षण में व्यस्त है। मीडिया विशेषज्ञ और सहायक सेवाएँ विशेषज्ञ भी मुक्त दूरस्थ शिक्षा द्वारा दिए जाने वाले शिक्षण और अधिगम के शैक्षणिक कार्यों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुक्त दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक की पहचान बहुत ही पेचीदा और विस्तृत है।

3.7 संस्था एक प्रोत्साहक है

यह प्रेक्षित है कि पारम्परिक शिक्षा के अध्यापक पढ़ाते हैं, दूर शिक्षा संस्थाओं के अध्यापक कहाँ पढ़ाते है ? संस्था एक व्यवस्था है जो कि सामान्य उद्देश्यों का बोध कराती है जो कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में समालोच्य है। उचित तर्क के साथ अच्छी अधिगम सामग्री और अच्छी विद्यार्थी सहायक सेवाएँ सफल मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के लिए सुविचारित महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ है। नेतृत्व की एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है जो कि परिणाम आधारित प्रबंध व्यवस्था बनाएँ जो कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करें।

4 मुक्त दूरस्थ शिक्षा का कर्म

भारतीय मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का वर्णन किया जा सकता है कि *'एक व्यवस्था, बहुत से मॉडल'*। इस व्यवस्था में अभ्यासात्मक रूप से बहुत बड़ी भिन्नता है। कार्यप्रणाली के बारे में कोई भी सामान्यीकरण को अपवादो से अर्हता प्राप्त करना होगा। यहाँ पर, वर्तमान में मुक्त दूरस्थ शिक्षा के अभ्यासों की मुख्य प्रवृत्तियों की पहचान करने की कोशिश की गई है। ये सम्मिलित हैं–

4.1 व्यापक पंजीकरण

दिल्ली यूनिवर्सिटी ने 1112 विद्यार्थियों के पंजीकरण के साथ पत्राचार कार्यक्रम शुरू किया था। अब हमारे पास मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थान जैसे मुक्त विश्वविद्यालय और दूर शिक्षा केंद्र सैकडों और हजारों विद्यार्थियों के पंजीकरण के साथ है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्विद्यालय दुनिया में एक मुक्त विश्वविद्यालय की व्यापक व्यवस्था है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा में नामांकन वृद्धि दर पारम्परिक व्यवस्था की वृद्धि दर से उच्च है। कुछ दोहरा माध्यम वाले संस्थानों में मुक्त दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थी पारम्परिक विद्यार्थियों से ज्यादा है। कुछ मुक्त विश्वविद्यालयों और मुक्त दूरस्थ शिक्षा केंद्रों में मुक्त दाखिले की नीतियाँ विशेषकर पूर्व स्नातक स्तर पर उदार शैक्षिक कार्यक्रमों में अपनाई जाती है। यह उन विद्यार्थियों के लिए दूसरा अवसर है जो कि किसी कारण से पारम्परिक व्यवस्था में पढ़ाई पूरी नहीं कर पाये और उनके लिए भी अवसर है जो कि सामाजिक आर्थिक कारणों से अपनी पढ़ाई निरंतर नहीं रख सकें।

4.2 कार्यक्रमों में विविधता

शुरू में मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में उदार कला कार्यक्रमों की शुरूआत इस कल्पना के साथ की गई कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा में शिक्षा उदार कला विषयों में ही उचित रहेगी। पहले दशक में मुक्त दूरस्थ शिक्षा की यात्रा में विज्ञान और व्यावसायिक कार्यक्रमों को प्रारंभ करने में एक भारी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। मुक्त दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालयों की स्थापना, समाज की आवश्यकताओं और आर्थिक विकास के परिणामों से मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के कार्यक्रमों में विविधता प्रदान की गई। अब, मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था सभी प्रकार के कार्यक्रम विज्ञान, तकनीकि, शिक्षा, प्रबंध, स्वास्थ्य विज्ञान, कृषि, सूचना तकनीकि, कला और संस्कृति इसमें उपलब्ध करवाती हैं। मुक्त दूरस्थ शिक्षा के लचीलेपन ने बहुत से संस्थानों को इस योग्य बनाया है कि वे कौशल विकास और व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को उपलब्ध करवायें जो कि बहुत से क्षेत्रों में बाजार और कर्मचारियों की ज़रूरतों को पूरा कर सकें। छोटी अवधि के विशेषीकरण कार्यक्रमों जो कि विशेष श्रेणियों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं वे बहुत लोकप्रिय हुए हैं। मुक्त दूरस्थ शिक्षा के पिछले पचास सालों में कार्यक्रमों का पेन्डुलम जो कि केवल कला कार्यक्रमों को प्रस्तावित करने तक सख्त तौर पर परिसीमित था अब वो कोई भी कार्यक्रम प्रस्तावित करने की तरफ अग्रसर हो गया है।

4.3 निजी कार्यक्षेत्रों की सक्रिय भूमिका

निजी क्षेत्र, विशेषकर प्रमुख उद्योगों के वादक अपने मानवीय संसाधनों के विकास के लिए मुक्त दूरस्थ शिक्षा को अपना रहे है, विशेषयताः व्यावसायिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण क्षेत्र जिसमें प्रमुख है। बहुत से नीजि वादक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मुक्त दूरस्थ शिक्षा के द्वारा ऑफर करते है। जिसमें बहुत से कार्यक्रम सर्टिफिकेट और डिप्लोमा स्तर के है, जिसमें सम्भवतः वे उचित निकाय से मान्यता प्राप्त नहीं है। यह प्रारूप व्यापक रूप से निजी कार्यक्षेत्रों में रोजगार सामर्थ्य के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

4.4 व्यावसायिक रूप से विस्तार करना

मुक्त दूरस्थ शिक्षा का विस्तार और विविधता, निजी क्षेत्रों में लाभ के प्रेरक रहे हैं और मुक्त दूरस्थ शिक्षा से संसाधनों की गतिशीलता निजी क्षेत्रों में चली हैं। व्यावसायिक प्रेरकों ने अधिगम सामग्री, सहायक सेवाएँ, मूल्यांकन व्यवस्था और प्रशासनिक प्रबंध के बारे में संस्थानों के निर्णयों को प्रभावित किया है।

4.5 तकनीकी का प्रयोग

पत्राचार संस्थानों ने प्रिंट सामग्री के साथ कार्यक्रम की शुरूआत की जिसमें सहायक सेवाओं का प्रयोग ना के बराबर था। सालों बाद बहुत से रूपों में बहु माध्यम का प्रयोग मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में किया जाने लगा। कुछ मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में मुख्य रूप से इग्नू ने पारस्परिक तकनीकी का प्रयोग कार्यक्रमों को चलाने के लिए शुरू किया। कुछ मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों ने सूचना संप्रेषण तकनीकि का प्रयोग शिक्षण–अधिगम और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए किया है। विकास के बावजूद, यहाँ तक कि भारत में पाँच दशकों के मुक्त दूरस्थ शिक्षा के बाद भी प्रिंट सामग्री एक प्रबल स्वरूप में अधिगम सामग्री के तौर पर इस व्यवस्था में प्रयोग की जा रही है। बहुत समय की अवधि के बाद केवल एक महत्वपूर्ण अंतर दिखाई दिया कि कार्यक्रम की अधिगम रणनीति में प्रिंट सामग्री में सुधार किया गया है और उसे बहुत ज्यादा स्वंय अधिगम सामग्री बनाया गया है। बहुत सी तकनीकियों के प्रयोग की प्रकृति बहुत ही सहायक है और जो कि बहुत से संस्थानों में केवल प्रतीकात्मक रूप में है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय बहुत ही सक्रिय रूप से शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहा है जिसमें सूचना संप्रेषण तकनीकी की आधारभूत संरचना और अधिगम सामग्री को बहुत से कार्यक्रमों जैसे तकनीकी के द्वारा शिक्षा का राष्ट्रीय मिशन (NMEICT), राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (NKN) तकनीकी के द्वारा परिवर्धित अधिगम का राष्ट्रीय कार्यक्रम (NPTEL) और बहुत से कार्यक्रम इसमें शामिल है। इग्नू का दूर शिक्षा परिषद, कॉमनवैल्थ ऑफ लर्निंग, कॉमनवैल्थ एजुकेशनल मीडिया सेंटर फॉर एशिया ने तकनीकी का मुक्त दूरस्थ शिक्षा में प्रयोग के लिए भारत में बहुत पहल की है।

4.6 गुणवत्ता अनिवार्य व्यवस्था

भारत में गुणवत्ता अनिवार्यता के लिए नीतियाँ, व्यवस्था और अभ्यासों के तौर पर मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में बहुत विविधता पाई जाती है। वर्णक्रम के एक तरफ अंत में हमारे पास इग्नू, कुछ मुक्त राज्य विश्वविद्यालय और कुछ मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थान है, जिनमें गुणवत्ता सुनिश्चितता के अभ्यासों में अच्छी अधिगम सामग्री, विद्यार्थी सहायक सेवाएँ और तकनीकी आधारिक संरचना इत्यादि हैं। वर्णक्रम के दूसरे छोर पर बहुत से संस्थान अवमानक स्तर के मुक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम व्यापक नामांकन के साथ फ्रेंचाइज़ी के द्वारा चलाते है। प्रभावी यंत्रविन्यास से कार्यक्रमों में गुणवत्ता सुनिश्चितता अपनी जगह पर आयेगी। इग्नू की दूर शिक्षा परिषद को ज़िम्मेदारी सौपी गई है कि भारत में मुक्त दूरस्थ शिक्षा में मानदण्डों का अनुरक्षण करें। दूर शिक्षा परिषद ने गुणवत्ता के मानदण्डों को बनायें रखने के लिए कुछ कदम उठायें है जिनमें मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के मूल्यांकन और प्रत्यायन के लिए मानक और दिशानिर्देश विकसित किए है; गुणवत्ता के प्रोत्साहन के लिए विकास सहायता; अधिगम संसाधनों की सहभागिता को बढ़ावा देना; मानवीय संसाधनों के विकास के लिए प्रशिक्षण में सहायता और गुणवत्ता सुनिश्चितता के लिए शोध को बढ़ाने में सहायता देना है। कॉमनवैल्थ ऑफ लर्निंग ने उच्च शैक्षिक संस्थानों में गुणवत्ता का स्वंय मूल्यांकन के लिए COLRIM विकसित किया है। कुछ मुक्त विश्वविद्यालय अपने संस्थानों में गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के लिए इसका प्रयोग करते है।

4.7 मुक्त दूरस्थ शिक्षा के लिए नियामक संरचना

मुक्त दूरस्थ शिक्षा के शुरूआती दौर में विश्वविद्यालय व्यवस्था से बाहर से कोई नियामक ढ़ाँचा ध्यान रखने के लिए नहीं था। बाद में मुक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम बहुत से विश्वविद्यालयों के द्वारा चलाये गये, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मुक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को शुरू करने के लिए दिशानिर्देश बनायें। दूर शिक्षा परिषद 1991 में स्थापित की गई मुक्त दूरस्थ शिक्षा मानकों को बनाये रखने के इसे नियामक उत्तरदायित्व सौंपे गये हैं। बहुआयामी नियामक संस्थाओं

से भी उम्मीद की जाती है कि वे व्यावसायिक तौर पर तकनीकी और व्यावसायिक मानकों को अपने क्षेत्राधिकार के अंदर नियमानुसार करें। नियामक अभिकरणों की विविधता भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था की विशेषता है और मुक्त दूरस्थ शिक्षा उस व्यवस्था का एक हिस्सा है। दूर शिक्षा परिषद पर प्रो. एन. आर. माधवा मेनन समिति ने वर्तमान मुक्त दूरस्थ शिक्षा नियामक व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया और पाया कि नियामक व्यवस्था अयोग्य और प्रभावहीन है। समिति द्वारा सुझायें गये विकल्पों का कार्यान्वयन अभी प्रक्रिया में है।

5 असंबद्ध के क्षेत्र

मुक्त दूरस्थ शिक्षा अभ्यासों का आलोचनात्मक परीक्षण आदर्शो के साथ कुछ असंबद्ध दिखाता है। जिनमें से कुछ ये हैं –

5.1 मुक्त दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों से भटकना

मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का अभिविन्यास लाभ कमाना और स्रोतों को पैदा करना हो गया है जिसके परिणामस्वरूप व्यवस्था के सामाजिक उद्देश्यों के साथ समझौता करना पड़ा है। यह विरोधाभासपूर्ण है कि व्यवस्था को साधन के तौर पर सामाजिक रूप से वंचितों के संसाधनों के उत्पादन के लिए किया जाएँ। कुछ सार्वजनिक विश्वविद्यालय मुक्त दूरस्थ शिक्षा और सबंद्ध व्यवस्था को संसाधनों के उत्पादन साधन के तौर पर प्रयोग कर रहे हैं। इसकी राशि की कुल आय अकादमिक मानकों का खुल्ला उल्लघंन है। धन कमाने का उद्देश्य बहुत सारे प्रकरणों में परिणामस्वरूप गुणवत्ता के साथ समझौता करना है। यह पर्यवेक्षण चिंताजनक है कि कुछ द्वैध प्रणाली के विश्वविद्यालयों के द्वारा मुक्त दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों को स्वीकार किया जाता है, लेकिन उनमें किसी भी तरह कि स्वामित्व और गौरव की भावना नहीं दिखाते है। उनकी उपयोगिता का आकलन अधिशेष पीढ़ी के तौर पर करते है। कुछ कुलपतियों के द्वारा यह सुनना उबाऊ है कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा द्वारा अधिशेष पीढ़ी को जोड़ने से उनकी उपलब्धि को बढ़ावा मिला है। यहाँ यह जरूरी है कि उन संस्थानों के बीच भेद बताया जाएँ कि जो स्व–वित्तपोषित गतिविधियों के द्वारा अपने स्रोतों को बनाकर संस्थान के भविष्य के विकास के लिए निवेश करते है और कुछ की रूचि केवल जल्दी से धन कमाने में है। जनता के लिए निश्चित रूप से लाभ से जुड़े संस्थान उन ढोंग करने वाले सार्वजनिक निवेश संस्थानों से श्रेयस्कर हैं जो मुक्त दूरस्थ शिक्षा द्वारा धन कमाकर किसी और उद्देश्य के लिए प्रयोग करते हैं।

5.2 मुक्त दूरस्थ शिक्षा अभ्यासों के खुलेपन में अवरोध

मुक्त दूरस्थ शिक्षा के जो विद्यार्थी मुक्त प्रवेश शाखा से पास होते है बाद में पारम्परिक व्यवस्था के कार्यक्रमों में दाख़िले और नौकरी प्राप्त करने में अनगिनत कठिनाइयों का सामना करते हैं। मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था द्वारा प्रस्तावित किये जाने वाले कार्यक्रमों पर बहुत सारे प्रतिबंध होते है। हाल ही में एम. एच. आर. डी. ने माधव मेनन समिति की सिफारिशों पर कार्यान्वयन के निर्देश दिए कि पारम्परिक विश्वविद्यालय/संस्थानों को केवल वे ही मुक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम चलाने दिए जाएँ जो कि उनके द्वारा नियमित पारम्परिक प्रणाली द्वारा भी चलाये जाते हैं। इस तरह के निर्देश विभिन्न मुक्त दूरस्थ शिक्षा समूहों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते हैं मुक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के व्यावसायिक विकास और क्षमता निर्माण के व्यापक उद्देश्यों के संदर्भ में कार्यात्मक प्रस्ताव नहीं बनाये जा सकते हैं। पारम्परिक व्यवस्था की बाध्यताएँ मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के लिए अवरोध न बनें। पारम्परिक व्यवस्था को मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के सभी अभ्यासों के लिए आदर्श मॉडल नहीं बना सकते हैं। मुक्त दूरस्थ शिक्षा को समूह की प्रकृति के उद्देश्यों और अधिगम रणनीतियों के आधार पर अपने अच्छे अभ्यासों को शामिल करना चाहिएँ। वर्तमान में मुक्त दूरस्थ शिक्षा मॉडल भी अधिगमकर्त्ता को पर्याप्त लचीलापन नहीं देते हैं जिससे वह दूसरे संस्थानों में विभिन्न प्रारूपों में अध्ययन जारी रख सकें। खुलापन को पारम्परिक व्यवस्था की संरचनात्मक जड़ता ने अवरोधित कर दिया है।

5.3 पारस्परिक तकनीक का सीमित प्रयोग

अंतः क्रिया शिक्षा का सार है। भारत में मुक्त दूरस्थ शिक्षा इस योग्य नहीं है कि शिक्षण–अधिगम गतिविधियों के लिए पारस्परिक तकनीक का प्रभावी प्रयोग कर सकें। पारस्परिक तकनीक गहन अकादमिक अनुबंध में सहायक होगी। सामाजिक सॉफ्टवेयर का प्रयोग जैसे ब्लॉग, विक्कीज़ पॉडकास्ट्स और सामाजिक नेटवर्किंग इस योग्य है कि अधिगमकर्त्ता को नेटवर्किंग अधिगम से जोड़ सकें। तकनीकि के प्रयोग से अधिगम की गुणवत्ता को सुधारा जा सकता है और ज्ञान आधारित समाज की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है लेकिन ज्यादातर मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा बहुत अच्छी तरह इसे प्रोत्साहित नहीं किया जा रहा है।

5.4 गुणवत्ता की कमी

मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को शीघ्र धन कमाने की लालसा ने कार्यक्रमों को बेचने की दिशा दी है और इन अभ्यासों में गुणवत्ता की कमी है। यह भी पूर्णतया संभव है कि प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार के संदर्भ में भी गुणवत्ता लाने का प्रबल दबाव हो लेकिन माँग पूरी करने के दबाव की व्यवस्था में उपलब्ध करने वाला माल को हर तरह के तिकड़म से बेचेंगा। योग्यता की सामाजिक माँग में है। बेपरवाही की क्षमताओं का परिणाम और निष्कर्ष गुणवत्ता के प्रति उदासीनता है। गुणवत्ता यंत्रविन्यास के लिए यह चुनौतीपूर्ण काम है कि ख़राब सेबों को पेटी से कैसे बाहर निकाला जाएँ।

5.5 प्रभावहीन नियामक व्यवस्था

भारत में बहुत समय से मुक्त दूरस्थ शिक्षा के लिए प्रभावहीन नियामक व्यवस्था रही है। इसका परिणाम यह है कि अधिनियम के तौर पर व्यक्तिपरक निर्णय प्रबन्धक की पसंद और पूर्वाग्रहों पर रहे हैं। नियामक व्यवस्थाओं का ज्यादातर संबंध बुरे अभ्यासों पर प्रतिबंध लगाना है न कि अच्छे अभ्यासों को सरल बनाना। कुछ मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा तकनीकि कार्यक्रमों को गलत तरीके से चलाया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप AICTE ने मुक्त दूरस्थ शिक्षा द्वारा चलाये जा रहे तकनीकि कार्यक्रमों पर रोक लगा दी। कुछ मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के शोध कार्यक्रमों में हज़ारों विद्यार्थियों को गुणवत्ता पर ध्यान दिये बिना पंजीकरण हुआ जिसके परिणामस्वरूप यू. जी. सी. ने

मुक्त दूरस्थ शिक्षा द्वारा शोध कार्यक्रमों पर प्रतिबंध लगा दिया। हम AICTE ओर यू. जी. सी. को उनके कार्य के लिए निंदा नहीं कर सकते हैं। हम, मुक्त दूरस्थ शिक्षा की हमारी बिरादरी के गैर ज़िम्मेदारी के कार्यो के लिए हम ही उत्तरदायी हैं। लेकिन, हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि नियामक निकायों की प्रतिक्रिया भिन्न थी। यह बहुत ही उचित होगा कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा द्वारा चलाये जाने वाले कार्यक्रमों की निर्धारित आवश्यकताओं को तय किया जाए न कि पूरी तरह से कार्यक्रमों को प्रतिबंध कर दिया जाएँ। मैं खुश हूँ कि नियामक निकायों ने अपने प्रस्ताव पर दोबारा सोच रही है और इन कार्यक्रमों को प्रस्तावित करने के लिए अधिनियम बना रहे हैं।

5.6 मुक्त दूरस्थ शिक्षा के प्रबंध में दक्षता की कमी

ज्यादातर मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संचालन व्यवस्था के क्रियाकलाप में दक्षता की कमी है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा के अधिगमकर्त्ताओं की साधारण सी उम्मीदें है कि अध्ययन सामग्री समय पर पहुँचें लेकिन बहुत से मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थान इन उम्मीदों को भी पूरा नहीं करते हैं। व्यवस्था बहुत ही व्यापक बन गई है और अधिगमकर्ताओं की सभी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उचित संरचना नहीं बनाई गई है। विद्यार्थी सहायक सेवाओं को पेशेवर तरीके से प्रबंधित करना चाहिएँ। परिणाम आधारित प्रबंध नये युग के संगठनों का मूल मंत्र है। नेतृत्व की कमी मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों से संबंधित एक ओर कमी है।

5.7 मुक्त दूरस्थ शिक्षा में अध्यापकों की भूमिका की अस्पष्टता

शिक्षक मुक्त दूरस्थ शिक्षा और पारम्परिक व्यवस्था में समान महत्व रखता है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा में हो सकता है कि अध्यापक का कार्य उलझन ओर कठिनाई भरा हो क्योंकि शिक्षण और अधिगम के उद्देश्यों के लिए बहुतकनीकि का प्रयोग किया जाता है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा दायरे की भूमिका, उत्तरदायित्व और व्यवस्था में दूसरे के साथ संबंधों में लगातार चर्चा रहती है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की पहचान को संतोषजनक रूप से परिभाषित नहीं किया गया हैं। विविध वादकों के बीच में संबंध और शिक्षण व अधिगम के लिए व्यस्त रहना मुक्त दूरस्थ शिक्षा में चिढ़न का लगातार स्रोत रहा है। यह एक भावना है कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा अध्यापक अकाद्मिक गतिविधियों के बज़ाए प्रबंधात्मक में ज्यादा व्यस्त रहता है। गहन अकाद्मिकता के लिए यह एक संतोषजनक स्थिति नहीं रहेगी। मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में प्रबंध को मज़बूत करके शिक्षकों को कुछ प्रशासनिक ज़िम्मेदारियों से मुक्त करके उनको इस योग्य बनाया जा सकता है कि वे अर्थपूर्ण अकाद्मिक योगदान दें।

6 आगे का रास्ता

भारत में मुक्त दूरस्थ शिक्षा ने महत्वपूर्ण योगदान उच्च शिक्षा में उस स्थान पर दिया है जहाँ पर रिक्त स्थान था। व्यवस्था ने पर्याप्त अनुभव और स्वीकृति प्राप्त की है जिससे वह भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें। इससे पहले व्यवस्था की सीमाएँ और व्यवस्था से संबंधित चर्चा केवल इसलिए की गई जिससे परिसीमाओं से बाहर आकर व्यवस्था को फिर से बल देकर इसके योगदान को ओर अधिक अर्थपूर्ण बनाया जा सकें। मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था को कैसे अधिगमकर्त्ता केंद्रित, अकादमिक स्वीकृत और संस्थायी तौर पर प्रभावी बनाया जा सकता है ? आगे के रास्ते के लिए निम्न सुझाव शामिल किए जा सकते हैं –

6.1 मुक्त दूरस्थ शिक्षा के सामाजिक उद्देश्यों को महत्व देना

गुरूकुल को अध्यापक केंद्रित व्यवस्था, परम्परागत व्यवस्था को संस्था केंद्रित ओर मुक्त दूरस्थ शिक्षा को अधिगमकर्त्ता केंद्रित व्यवस्था माना जाता है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा के सामाजिक उद्देश्यों, सेवाओं का निर्देशन और मुक्त दूरस्थ शिक्षा के विकास निर्देशन को पुर्नमहत्व देने की जरूरत है। यह आवश्यक है कि व्यवस्था को लाभकर्त्ताओं ओर धोखाधड़ी करने वालों से बचाने की जरूरत है। बाजार आधारित अर्थव्यवस्था स्वीकार्य है, लेकिन शिक्षा इस तरह की बाजार सामग्री है, जिसके बहुत से अस्वीकार्य सामाजिक निहितार्थ है।

6.2 अधिगम की "मध्यस्थ प्रक्रिया" को सावधानी से चयनित करना चाहिएँ

"मध्यस्थ प्रक्रिया" शिक्षण अधिगम के लिए प्रयोग की जाती है और मुक्त दूरस्थ शिक्षा को प्रभावी बनाने में संप्रेषण एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मुक्त दूरस्थ शिक्षा की प्रविधि तैयार करते समय उद्देश्य आधारित समूह की प्रकृति, संस्थायी तत्परता ओर प्रासंगिक घटको को ध्यान में रखना चाहिए। यह कहा जाता है कि यदि दो तरह कि परिस्थितियाँ हो, अधिगमकर्त्ता की मुक्त दूरस्थ शिक्षा में सीखने की तत्परता ओर शिक्षण व अधिगम की उपयुक्त प्रविधि को अपनाने की संस्थायी तत्परता यदि पूरी हो रही हो तो मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थान किसी भी कार्यक्रम को प्रस्तावित कर सकते हैं। मुक्त दूरस्थ शिक्षा के संचालन व प्रबंधन को समझने के लिए स्टाफ ओर नेतृत्व की संस्थायी सक्षमता करना जरूरी हैं।

6.3 ऐसी गुणवत्ता बनाना जो कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा के तत्वों को परिभाषित करें।

मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थान गुणवत्ता के प्रति उत्तरदायी बनें ओर उनको आवश्यक स्वायत्तता के साथ सशक्त बनाया जाएँ ताकि वे गुणवत्ता के लिए कदम उठा सकें। आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चिय व्यवस्था स्टाफ को सक्षम बनायें जो कि गुणवत्ता सुनिश्चिय को समझें और प्रबंधित करें। गुणवत्ता सुनिश्चिय फ्रेमवर्क केवल शैक्षिक प्रक्षेपण पर ही नहीं बल्कि सामाजिक परिणामों पर भी ध्यान केंद्रित करें। अधिगम व्यवस्था ओर सामग्री का लैंगिक और वर्ग के संबंध में सामाजिक अंकेक्षण हो जिससे परिवेश में मुक्त दूरस्थ शिक्षा को सामाजिक प्रासंगिक व्यवस्था बना सकें। बाह्य नियामक प्राधिकार आतंरिक व्यवस्था को गुणवत्ता सुनिश्चिय के लिए सरल बनायें और सार्वजनिक ज़वाबदेही को सुनिश्चित करें। प्राधिकारों को उन्नति संबंधी मापकों को ध्यान में रख कर मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की अवाँछनीय अभ्यासों को आवश्यक तौर पर रोकना चाहिएँ। यह विवाद का विषय रहता है कि प्राधिकार निकायों को कहाँ स्थापित किया जाएँ और ये क्या कर सकते हैं व इनका निर्देशन क्या होगा। जब तक एक अच्छी व्यवस्था बनें, मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था को विधिपूर्वक समतुल्यता के साथ नियामक अभ्यासों के साथ परंपरागत व्यवस्था में स्वीकार करें। संस्थायी स्वायत्तता पर बहुत से

आयोग ओर समितियों ने परंपरागत व्यवस्था में बल दिया है जो कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में भी समानरूप से स्वीकार्य होना चाहिएँ। व्यवस्था में विश्वास जरूरी है जिससे व्यवस्था पर भरोसा बना रहें।

7 निष्कर्ष की ओर

"भविष्य इस पर निर्भर करता है कि हम वर्तमान में क्या करते है"

– महात्मा गाँधी

नोट्स

1 इस प्रस्तुतीकरण में ज्यादातर आँकड़े "Report of the Committee to suggest Measures to Regulate Standards of Education Being Imparted Through Distance Mode" प्रो. एन. आर. माधवा मेनन कि अध्यक्षता में बनी समीति, एम. एच. आर. डी, भारत सरकार, दिसंबर 2011 पर आधारित है। इस प्रस्तुतीकरण के विचारों को स्वतंत्र रूप से विश्वसनीय लेखकों जैसे गजारज धनराजन, सर जॉन डेनियल, आशा कनवॉर, एलेन टेट व बहुत से लेखक और सी.ओ.एल. के प्रकाशन से लिया गया है। व्यक्तिगत संदर्भो को मुक्त विचारों के भाव से सार्वजनिक चर्चा के उपयोग के कारण छोड़ दिया गया है।

2 कुछ समय अक्टूबर ओर नवबंर, 2012 में, मैनें क्षेत्रीय केंद्र इग्नू, हैदराबाद में अकादमिक कॉऊसलर को मुक्त दूरस्थ शिक्षा के धर्म विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया था। मेरे प्रस्तुतीकरण को STRIED, IGNOU के डॉ. आर. सत्यानारायना द्वारा अनुसरण किया गया। उन्होनें कहा कि वह मुक्त दूरस्थ शिक्षा के कर्म पर एक प्रस्तुतीकरण देंगे। इस विचार को बनानें में पता नहीं उन्हें किसने प्रेरित किया। परंतु उन्होंने मुझे मुक्त दूरस्थ शिक्षा के धर्म (आदर्श) और कर्म (अभ्यास) के संबंध पर चिंतन करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. संजया मिश्रा, निदेशक सिमका का विषय पर ज्ञानविषयक अवलोकन के लिए धन्यवाद।